शोध-चिंतन पत्रिका: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
अंक:3; जुलाई-दिसंबर, 2021; पृष्ठ संख्या: 78-86

समीर ताँती की कविताओं में चित्रित आर्थिक चेतना

✍ रूबी मणि दास

शोध-सार:

अर्थ आज के युग का मूल तत्व है, अर्थ को हम वर्तमान समाज की रीढ़ की हड्डी भी कह सकते हैं। आज समाज और मनुष्य के विकास का मूल तत्व अर्थ ही है। अर्थ के अभाव में मनुष्य एवं समाज का विकास सम्भव नहीं। एक जागरूक साहित्यकार अपने समाज तथा आस-पास में घटित घटनाओं के प्रति हमेशा सचेत होता है। युगीन आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक ,धार्मिक विषमताएँ कवि या साहित्यकार के हृदय को आंदोलित न करें, ऐसा सम्भव नहीं। इस शोध-पत्र में समीर ताँती की कविताओं में चित्रित आर्थिक चेतना को प्रस्तुत किया गया है। समीर ताँती जो असमीया साहित्य के समकालीन कवि हैं, इन्होंने अर्थ के अभाव में समाज में फैली अनेक प्रकार की विषमताओं, लाचारी, गरीबी आदि को भली-भाँति महसूस किया है, जिनका प्रतिफलन हम उनके द्वारा लिखित कविताओं में देख सकते हैं।

बीज शब्द: *समीर ताँती, असमीया कविता, आर्थिक चेतना, चाय-बागान, चाय मजदूर।*

प्रस्तावना:

समीर ताँती एक साधारण कवि नहीं हैं। बीसवीं सदी के अंतिम दशक में हमारे समाज एवं राजनीति से जुड़ी नकारात्मक दिशा को जिस ओजपूर्ण शब्द और रूपक के माध्यम से समीर ताँती ने अपनी कविताओं में वाणीबद्ध किया है, वैसे अन्य किसी भी कवि ने नहीं किया है। इसलिए असमीया साहित्य में समीर ताँती को समकालीन कविता का एक महत्वपूर्ण

कण्ठस्वर कहा जाता है। वे दलितों और पीड़ितों के कवि हैं।

प्रत्येक देश, समाज या क्षेत्र की अपनी-अपनी सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ होती हैं। समीर ताँती ने अपनी कविताओं में असम प्रांत की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि परिप्रेक्ष्य को लिया है। वे अनुसूचित चाय जनजाति के हैं। उन्होंने बचपन से ही चाय जन- जाति के लोगों के दुख-दर्द, गरीबी-लाचारी, शोषण आदि को देखा है और महसूस किया है। उन्होंने आर्थिक वैषम्य के शिकार चाय जनजाति के लोगों के कारुनिक चित्र अपनी कविताओं में उभारे हैं। साथ ही इसी परिप्रेक्ष्य में वर्ग-विषमता की विभीषिका और चाय बागानों में घुटता हुआ जन-जीवन भी मूर्त रूप में उनके साहित्य में चित्रित हुए हैं।

प्रस्तुत लेख में अपनायी गयी अध्ययन की पद्धति विश्लेषणात्मक है। अध्ययन में असमीया भाषा के ग्रंथों का सहारा लिया गया है। संदर्भ उल्लेख तथा संदर्भ ग्रन्थ-सूची के प्रस्तुतीकरण में MLA (Modern Language Association) पद्धति के प्रचलित दिशा-निर्देशों का पालन किया गया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में असमीया भाषा की कुछ कविताओं की पक्तियाँ दी गयी हैं। असमीया भाषा में 'स' उच्चारण वाले दो वर्ण हैं- 'च' और 'छ'। असमीया भाषा में 'स' वर्ण के लिए कोमल 'ह' का उच्चारण होता है। असमीया 'स', 'च', 'छ'-इन तीनों वर्णों के लिए देवनागरी लिप्यंतरण में क्रमश: 'स', 'च', 'छ' रखे गये हैं। हिंदी भाषा के 'य' वर्ण के लिए असमीया भाषा में दो वर्ण हैं- एक का उच्चारण 'य' ही है और दूसरे का उच्चारण 'ज' होता है। असमीया 'य' के लिए हिंदी में भी 'य' रखा गया है, पर असमीया के 'य' के 'ज' वाले उच्चारण के लिए देवनागरी लिप्यतंरण में 'य़' रखा गया है।

विश्लेषण:

समीर ताँती की रचनाओं की पटभूमि है असम। यही उनका जन्मस्थान तथा आवासभूमि भी है। उनकी कविताओं के विशाल परिप्रेक्ष्य में है समग्र पृथ्वी। समीर ताँती अन्य आधुनिक कवियों की भाँति संशय और संदेह के वशीभूत होकर निराशा का आश्रय नहीं लेते। वे कहते हैं-

विभीषिकाओं के अंत होने पर एक दिन शांति की स्थापना होगी। (डेका 2013:267)

आशावाद उनकी कविता का मूल स्वर है। लेकिन उनकी कविताओं में हमें विभिन्न समय की विविध मानसिक अवस्थाओं का रूप भी देखने को मिलते हैं। 19 वीं सदी के मध्य भाग से 20 वीं सदी के मध्य भाग तक पूर्वी भारत के आदिवासी मुख्य प्रदेशों से जनजातीय चाय श्रमिकों को कई चरणों में चाय बागानों में मजदूरी करने के लिए लाया गया था। चाय-बागानों में उनका जीवन-यापन बहुत ही दयनीय था। चाय मजदूरों का हर दिन हाजिरी लिया जाता था। बीमार होने पर भी उनको हमेशा मजदूरी करने आना पड़ता था। उन्हें किसी भी प्रकार की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं होती थी। चाय मजदूरों को बहुत ही कम बेतन दिया जाता था जिससे उनके परिवार का भी पालन पोषण नहीं हो पाता था। चाय बागानों में स्वास्थ्य एवं शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी। बागानों के मालिक, बड़े अफसरों द्वारा मजदूरों पर कई तरह के अत्याचार किए जाते थे। समीर ताँती के माता-पिता चाय बागान में काम करने वाले मजदूर थे, इसलिए उन्होंने बचपन से ही चाय मजदूरों पर होनेवाले अत्याचार, शोषण तथा मजदूरों की दयनीय आर्थिक स्थिति को देखा था। अर्थ के अभाव में या कहें आर्थिक मजबूरी के कारण ही चाय मजदूर शोषण के शिकार बनते थे।

समीर ताँती की कविताओं में व्यक्त आर्थिक चेतना:

वर्तमान युग में अर्थ एक ऐसा तत्व है जिससे मानव जीवन की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। व्यक्ति के व्यक्तित्व-विकास में हो या परिवार के पालन-पोषण में, अर्थ विशिष्ट भूमिका निभाता है। अर्थ के अभाव में व्यक्ति, जीवन में आनेवाली हर समस्या का सामना नहीं कर पाता। अकाल तथा अभावों से जूझकर अंतत: मनुष्य हार मान लेता है और अपने भाग्य पर ही दोषारोपण करता है। समीर ताँती ने अपनी कविताओं में आर्थिक संघर्ष से जुड़ी विभिन्न समस्याओं जैसे– अशिक्षा, गरीबी, शोषण आदि का चित्रण किया है।

अशिक्षा:

किसी भी देश या समाज में आर्थिक शोषण का मुख्य कारण है- अशिक्षा और गरीबी। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति आर्थिक

दृष्टि से स्वावलम्बी होकर अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो सकता है और अपना शोषण होने से रोक सकता है। शिक्षा एक परिवार के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समीर ताँती ने आर्थिक वैषम्य के शिकार सर्वहारा वर्ग के कारुणिक चित्र अपनी कविताओं में उभारे हैं। चाय मजदूर शिक्षा के अभाव में अपने ऊपर होनेवाले शोषण, अत्याचारों का विरोध करने में असमर्थ थे। मजदूर अच्छे या बुरे की पहचान नहीं कर पाते थे। मालिक वर्ग जो कहते थे उसी को सच मानकर दिन-रात मेहनत करते थे। अशिक्षित होने के कारण ही उनके मन में यह धारणा होती है कि गुलामी करना, पशु की भाँति जीवन व्यतीत करना ही उनका भाग्य है।

समीर ताँती ने 'चालाम हजुर, हामि गिरमिटियार बेटा' कविता में गिरिमिटिया मजदूरों की दयनीय स्थिति के बारे में कहा है-

चालाम हजुर
हामि गिरमिटियार बेटा
आपोनार लाइनत थाको
येनेके थाके कुकुर आरु गाहरि
आपोनार बांग्लार परा दूरैत।

(ताँती 2014:63)

(भावार्थ: आशय यह है कि एक मजदूर अपने मालिक से कहता है कि चालाम मालिक मैं गिरमिटिया का बेटा हूँ। मैं आपके बंगले वाली कतार में ही रहता हूँ। जैसे कुत्ते और सुअर रहते हैं- वैसे ही हम भी रहते हैं आपके बंगले से दूरी पर।)

फिर 'ईश्वर वंदना' नामक कविता में भूख के कारण बनी स्थिति के बारे में कवि ने कहा है-

प्रभु
आमार भोकर बाबे दाय-दोष नधरिबा
आमि उपजिलो आमार भोकत
निमखर दरे चाहत गलिबलै।

(ताँती 2014:21)

(भावार्थ: हे प्रभु, भूख के लिए हमसे अगर कोई भूल-चूक हो जाए तो हमें क्षमा करना। हमारा जन्म ही भूख में हुआ है। हमें गरीबी में ही हमेशा गुजारा करना पड़ेगा। जिस प्रकार चाय में नमक घूल-मिल जाता है, उसी प्रकार हम भी सभी परिस्थितिओं के साथ घूल जाते हैं।)

'सहज आछिला बाबे' नामक कविता में कवि ने गिरिमिटिया मजदूरों को धोखे से असम लाये जाने की बात का खुलासा करते हुए इस प्रकार कहा है-

हे निठुर श्याम
फाँकि दिये आनिलि आसाम
भोक संध्या ईश्वर। मौन पोहर
पढ़ि याउँ हाड़बोर शोकर मेजत
क'त राति क'त नारी। क'त पुतिला हुमुनियाह।

(ताँती 2014:12)

औपनिवेशिक शासक-गोष्ठी के द्वारा सहज-सरल लोगों को मजदूरी करने के लिए जिस प्रकार असम में लाया गया था उसी का वर्णन कवि ने यहाँ मर्मस्पर्शी रूप में किया है। लाचार मजदूरों की भूख, गरीबी और आहें इन पंक्तियों में प्रतिबिम्बित हो उठी हैं।

इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि चाय -बागानों में मजदूरों की अवस्था कैसी होती है। किस प्रकार मजदूर जानवरों जैसा जीवन-यापन करते हैं। अशिक्षा के कारण वे लोग अपने ऊपर हुए सभी अत्याचारों के लिए भाग्य को ही दोष देते हैं।

शोषण:

कवि समीर ताँती ने 'चाह बागिचा तोमार रोटी' नामक कविता में कहा है कि चाय मजदूर केवल अपने पेट की भूख मिटाने के लिए दिन-रात कारखानों में काम करते हैं। कारखानों_में काम करते हुए वे अपने प्राणों की आहुति देते हैं। शोषक-वर्ग के वाणिज्यिक लाभ के लिए चाय मजदूर अपना सब कुछ त्याग देते हैं-

कलघरर धुँवात घुखर एकोटा दिन
तोमार कामिहाड़त कलघरर उखाह
चाह बागिचा तोमार रोटी
तुमि चाह बागिचार माटि।

(ताँती 2014:33)

'एखिला पात सेउजीया' नामक कविता में भी समीर ताँती ने चाय मजदूरों पर हुए शोषण का मार्मिक चित्रण किया है –

कलघर कलघर
सिँचरित हाड़-मङह
बाकचे बाकचे।

(ताँती 2014:11)

(भावार्थ: मजदूर चाय बागानों से चाय पत्ती तोड़कर लाते हैं, कारखानों में उसे अनेक प्रयोगों के माध्यम से पीने लायक बनाया जाता

है और बक्सों में भरा जाता है। कवि कहते हैं कि उन बक्सों में चाय-पत्तियों के स्थान पर लाखों मजदूरों के हाड़-माँस यानी उनका श्रम भरा हुआ है।)

'आसन सलनि ह'ले' नामक कविता में चाय मजदूरों पर होने वाले लगातार शोषण के बारे में कवि कहते हैं –

आसन सलनि ह'ले सलनि नहय समय
एकेइ थाके दिन पेटत पानीगामोछा बांधि
एकेइ थाके तार ज्वाला
सलनि नहय भोक येने आछिल आगत
तेनेदरेइ बाढ़े सदागरी शोषण।

(ताँती 2009:23)

(भावार्थ: कवि कहते हैं कि मजदूरों का समय, उनकी हालत कभी बदलती नहीं। अतीत, वर्तमान और भविष्य एक जैसे ही हैं। बागानों में नए बड़े-बड़े अफसर आते हैं लेकिन मजदूरों की दशा एक जैसी ही रहती है। उन पर शोषण दिन व दिन बढ़ता ही जाता है।)

'चाह बागिचा मोर चाह बागिचा' नामक कविता में मजदूरों की क्षुधा और शोकग्रस्तता के बारे में कवि का कहना है-

तोमार क्षुधा थाकक तोमार स'ते
निद्रा आरु यौनतार आशे-पाशे
तुमि थाका संध्या शोकर निर्जनतात।

(ताँती 2014:46)

(भावार्थ: चाय मजदूरों पर हुए शोषण की मर्मस्पर्शी गाथा कवि ने यहाँ प्रस्तुत किया है। कवि कहते हैं कि तुम्हारी भूख-क्षुधा को समझने वाला कोई नहीं है। तुम्हारी क्षुधा जीवन के अंत तक तुम्हारे साथ ही रहेगी। मजदूर सुबह काम करने जाते हैं और शाम को लौटकर खाली पेट केवल अपने भाग्य पर रोते हैं।)

गरीबी:

चाय-बागानों में बच्चों के पढ़ने के लिए शिक्षा की व्यवस्था होती तो मजदूरों की हालत थोड़ी- बहुत सुधरती। शिक्षा की उचित व्यवस्था न होने के कारण ही एक परिवार के सभी जन मजदूर-श्रमिक ही बनते हैं। माता-पिता के बाद बच्चें भी मजदूर ही बनते हैं। फलस्वरूप मजदूरों की आर्थिक स्थिति एक जैसी ही बनी रहती है। धन के अभाव में मजदूर अपने बच्चों को पढ़ाने में असमर्थ हैं। मालिक वर्ग के द्वारा मजदूरों को पढ़ने-लिखने, अपनी हालत को सुधारने का मौका ही नहीं दिया जाता है।

फलस्वरूप मालिक वर्ग दिन व दिन अमीर बनते जाते हैं और श्रमिक वर्ग गरीब।

'उरे निशा चाह बागिचार माजेरे' नामक कविता में कवि ने चाय जन-जाति की दरिद्रता का चित्रण किया है। चाय-बागानों में काम करके जीवन-यापन करनेवाले इन लोगों का जीवन किस प्रकार गरीबी, बीमारी से जर्जर है, इसका प्रतिफलन इस कविता में हुआ है-

गभीर आवेदन
आरु तेजर नीरवता
बिबर्ण बाट आरु बिधवार हुमुनियाह।

(ताँती 2014:15)

(भावार्थ: इन पक्तियों में कवि के कहने का आशय है कि चारों तरफ केवल दुख और बेबसी है, एक तरफ विधवा का दुख है तो दूसरी तरफ बीमार संतान को अपनी आँखों के सामने तड़पते हुए देखने का दुख। अपने दुखों को दूर करने के लिए इनके पास कोई साधन नहीं है। इन लोगों के सामने सिर्फ उदासी से भरा हुआ एक पथ है।)

'चाहपानी ने चकुपानी' नामक कविता में कवि समीर ताँती चाय मजदूर की गरीबी को व्यंजित करते हुए कहते हैं -

चाहपानी ने चकुपानी
हयतो मोर कलिजार तेज
पियला भराय बाकि दिँलो
धुँआइ धुँआइ नाचि उठा मेज।

(ताँती 2014:14)

(भावार्थ: कवि कहते हैं कि यह चाय है या मजदूरों के आँसू। यह मेरे हृदय का रक्त है। हम प्याले में चाय नहीं बल्कि मजदूरों के रक्त को पीते हैं। कवि के कहने का आशय है कि बागानों में मजदूर दिन भर काम करते हैं फिर भी शाम को घर आकर उन्हें भूखे पेट सोना पड़ता है। मजदूरों को अपनी मेहनत का उचित मूल्य भी प्राप्त नहीं होता। इसलिए कवि कहते हैं कि हम चाय नहीं बल्कि मजदूरों के रक्त को पीते हैं।)

समीर ताँती के काव्य-संग्रह 'कदम फुलार राति' की 'मइ एक चाह मजदूर' नामक कविता में कहा गया है-

मइ एक चाह मजदूर
सेउजीयार आंधारत जन्म।

(ताँती 2014:26)

(भावार्थ: यहाँ कवि के कहने का आशय है कि मैं एक चाय-बागान में काम करने वाला मजदूर हूँ, जिसका जन्म चाय-पत्तों के हरे अंधकार में हुआ है। कवि कहना चाहते हैं कि चाय-बागान में जन्म लेने वालों का जीवन अंधकारमय होता है।)

निष्कर्ष:

यह कहा जा सकता है कि समीर ताँती ने अपनी कविताओं में अर्थ और मनुष्य के पारस्परिक सम्बंध को समझा है तथा आर्थिक समस्याओं से जुड़े विभिन्न पहलुओं को अपनी कविताओं में चित्रित किया है। चाय-बागानों में रहनेवाले लोगों का जीवन, इस एक ही विषय-वस्तु को लेकर कवि समीर ताँती ने बहुत सी कविताओं की रचना की है। यह कहा जाता है कि कवि का भाषा पर पूर्ण अधिकार होना आवश्यक होता है ताकि कवि के हृदय स्थित भावों को व्यक्त करने में भाषा पूर्णत: सक्षम हो। समीर ताँती ने अपने भाव-विचारों को अत्यंत सहज-सरल भाषा के माध्यम से व्यक्त किया है। उन्होंने आधुनिकतावादी भाषा-रीति के माध्यम से अपनी कविताओं में संग्रामी जीवन की छवि को प्रस्तुत किया है। देश के प्रति, देश की जनता के प्रति अपने प्रेम को अभिव्यक्त करने के लिए कवि ने बलिष्ठ एवं सक्षम भाषा का प्रयोग किया है।

कवि के हृदय में यह विश्वास है कि वर्ग-भेद की समस्या एक दिन समाप्त होगी। पूँजीपति मालिकों द्वारा चाय मजदूरों पर हुए अत्याचार, शोषण का अंत होगा। कवि के मन में यह आशा है कि चाय जन-जाति के लोगों में एक दिन नयी समाज व्यवस्था की स्थापना होगी। श्रमिक, मजदूरों की शक्ति के सामने एक दिन पूँजीपति मालिक-वर्ग को पराजय स्वीकार करना पड़ेगा।

ग्रंथ-सूची:

डेका, हरेकृष्ण. आधुनिक कबिता. प्रथम. गुवाहाटी: पेप्यीरस, 2013.

ताँती, समीर. शुनिछाने खेई मात. प्रथम. पानबजार: एन.एल.पब्लिकेशन, 2009.

--. सेउजीया उत्सव. दूसरा. पानबजार: लर्यास बूक स्तल, 2012.

--. कदम फुलार राति. प्रथम. पानबजार: बनलता, 2014.

संपर्क-सूत्र:
शोधार्थी, हिंदी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय
ई-मेइल: rubimoni345@gmail.com